PAPER-III
PHILOSOPHY

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) __________________________
   (Name) ____________________________
2. (Signature) __________________________
   (Name) ____________________________

Roll No. | | | | | | | | |
(In figures as per admission card)

Roll No.________________________________
(In words)

D 0 3 1 0

Time : **2 ½** hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **19**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।
9. किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।

PHILOSOPHY

दर्शनशास्त्र

PAPER – III

प्रश्नपत्र – **III**

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

SECTION – I

खंड – I

Note : This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

नोट : इस खंड में **बीस–बीस (20)** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. Discuss the concept of suffering (duḥkha) in the schools of Indian Philosophy.
भारतीय दर्शन की विचार पद्धतियों में दु:ख की अवधारणा की विवेचना कीजिए ।

OR / अथवा

Why does St. Thomas Aquinas disregard the ontological proof for the existence of God ? Discuss.
संत थॉमस एक्विनस ईश्वर के अस्तित्व के लिए सत्तामूलक तर्क को क्यों नकारते हैं ? चर्चा कीजिए ।

2. Examine different theories of error (Khyativāda) in Indian Philosophy.
भारतीय दर्शन के ख्याति सम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्तों का परीक्षण कीजिए ।

OR / अथवा

How does Russell differ from Moore in refutation of idealism ?
प्रत्ययवाद के खण्डन में रसेल किस भाँति मूर से भिन्न हैं ?

SECTION – II
खंड – II

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 Marks)**

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता से **तीन** (3) प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल **एक** ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के **तीनों** प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह** (15) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ** (300) शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

Elective – I / विकल्प – I

3. Compare Judaism's concept of God with that of Christianity.
ईश्वर के प्रत्यय की यहूदी अवधारणा की ईसाई अवधारणा से तुलना कीजिए ।

4. What are the 'Five Pillars' of Islam ? Explain.
इस्लाम के 'पाँच स्तम्भ' क्या हैं ? व्याख्या कीजिए ।

5. What do you mean by the doctrine of incarnation ? Write with special reference to Hinduism.
अवतार के सिद्धान्त का क्या तात्पर्य है ? हिंदू परम्परा के विशेष संदर्भ में उत्तर दीजिए ।

OR / अथवा

Elective – II / विकल्प – II

3. Comment on the linguistic turn in Philosophy.
दर्शन में भाषाई-मोड़ पर टिप्पणी कीजिए ।

4. Examine Wittgenstein's Theory of Meaning.
विट्गेंस्टाइन के अर्थ-सिद्धान्त का परीक्षण कीजिए ।

5. Explain the terms :
(a) Proper names
(b) Definite descriptions
(c) Demonstratives
निम्नलिखित शब्दों को स्पष्ट कीजिए :
(a) व्यक्तिवाचक नाम
(b) निश्चयात्मक विवरण
(c) निदर्शनात्मक

OR / अथवा

Elective – III / विकल्प – III

3. Discuss the problem of intentionality in phenomenology.
विश्व प्रपंचवाद में स्वातिगता की समस्या की विवेचना कीजिए ।

4. Comment on the idea of text and interpretation.
मूलपाठ और व्याख्या की अवधारणा पर टिप्पणी कीजिए ।

5. Account for the question of life-world (Lebenswelt) in Husserl.
हुसर्ल के दर्शन में जीव-जगत् के प्रश्न का औचित्य बतलाइए ।

OR / अथवा

Elective – IV / विकल्प – IV

3. State the meaning of the Mahāvākya "That-thou-art", according to Śaṁkara.
शंकराचार्य के अनुसार 'तत्त्वमसि' महावाक्य का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

4. Write, in brief, Rāmānuja's refutation of 'Māyā'.
रामानुज कृत माया के खण्डन को संक्षेप में लिखिए ।

5. State the relation between Jiva and Bramhan according to Madhva and Vallabha.
मध्व तथा वल्लभ के अनुसार जीव तथा ब्रह्म के बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – V / विकल्प – V

3. Explain Gandhi's Philosophy of Non-Violence.
गांधीजी के अहिंसा-दर्शन की व्याख्या कीजिए ।

4. Explain 'Satyāgraha' as a political ideology according to Gandhiji.
गांधीजी के अनुसार राजनैतिक आदर्श के रूप में 'सत्याग्रह' को स्पष्ट कीजिए ।

5. Explain, according to Gandhiji, 'God is Truth and Truth is God.'
'ईश्वर सत्य है और सत्य ही ईश्वर है ।' इस कथन पर गांधीजी के अनुसार प्रकाश डालिए ।

SECTION – III
खंड – III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 Marks)**

नोट : इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. Give an account of Sāmānya as one of the Vaiśeṣika categories.
वैशेषिक पदार्थों में से सामान्य का विवरण दीजिए ।

7. Explain the problem of personal identity.
वैयक्तिक अस्मिता की समस्या को स्पष्ट कीजिए ।

8. Explain parataḥprāmāṇyavāda as a theory of validity.

प्रामाण्य के रूप में परतः प्रामाण्यवाद को स्पष्ट कीजिए ।

9. Distinguish between nirvikalpaka and savikalpaka pratyakṣa after the Nyāya school.
न्यायदर्शन के अनुसार निर्विकल्पक तथा सविकल्पक प्रत्यक्ष में भेद कीजिए ।

10. Explain the coherence theory of truth.
सत्य के संसक्तता सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए ।

11. Explain different types of Ṛṇa (debt).

ऋण के विभिन्न प्रकारों को स्पष्ट कीजिए ।

12. Explain the retributive theory of punishment.
दण्ड के प्रतिकारात्मक सिद्धान्त पर प्रकाश डालिए ।

13. Classify categorical propositions following the combined principles of quality and quantity.
गुण और परिमाण के संयुक्त सिद्धान्तों के अनुसार निरपेक्ष तर्कवाक्यों का वर्गीकरण कीजिए ।

14. Explain the preliminary version of E.I. indicating the restriction, if any, in using the rule.
नियमों, यदि कोई हों, की सीमा को लक्ष्य करते हुए, ई.आई. के प्रारम्भिक स्वरूप को स्पष्ट कीजिए ।

SECTION – IV
खंड – IV

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 Marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच** (5) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस** (30) शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच** (5) अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

Plato and Aristotle embody an essential difference in how the philosophical enterprise is conceived. In Plato we see the search for eternal truths, for certainty, for precision and for the reality behind the appearance of the world. Aristotle in many ways shares these aims. But they are tempered by what one might call a realism or pragmatism. For Aristotle, the quest for knowledge has to start with what we have got, imperfect though it may be. We also have to accept that we may not be able to achieve absolute certainty and that absolute precision may also be impossible in some enquiries. And though we do want to uncover the truths that lie behind appearances, these may still be truths of our world, rather than of some mystical other realm, which Plato often seems to imply.

In this way, Aristotle is an example of a very worldly philosopher, while Plato is an other-worldly one. While many see wisdom in Aristotle's realism and fantasy in Plato's grander projects, others see Aristotle as lacking in ambition and Plato as representing the purer philosophical impulse.

प्लेटो और अरस्तू एक अनिवार्य भिन्नता को मूर्तिमान करते हैं कि एक दार्शनिक उद्यमता की परिकल्पना कैसे की जाती है । प्लेटो में हम शाश्वत सत्यों की खोज को देखते हैं । यह खोज निश्चयात्मकता के लिए थी, परिशुद्धता और संसार के प्रतिभास के पीछे की वास्तविकता को जानने के लिए थी । अरस्तू उनके उद्देश्यों से कई अर्थों में सहमत थे । मगर ये उद्देश्य कुछ ऐसे सिद्धान्तों से क्षतिग्रस्त होते हैं जिन्हें हम वस्तुवाद अथवा प्रयोजनवाद कह सकते हैं । अरस्तू के अनुसार, ज्ञान की खोज को उस ज्ञान से प्रारम्भ होना पड़ेगा जो ज्ञान हमें पहले से ही प्राप्त है, भले ही यह कितना ही अपूर्ण क्यों न हो । हमें यह भी मानना होगा कि हम पूर्ण निश्चयात्मकता को प्राप्त करने में सफल न हों और कुछ जिज्ञासा की पूर्ण परिशुद्धता को ढूँढ़ पाना भी असंभव हो । और यद्यपि इन आभासों के पीछे छिपे सत्यों का अनावरण करना चाहते हैं चाहे हमारे ही संसार के सत्य क्यों न हों, ये ऐसे सत्य हो सकते हैं जो किसी अन्य रहस्यात्मक लोक के हों, जैसा कि प्लेटो प्राय: दर्शाना चाहते हैं ।

इस प्रकार, अरस्तू एक बहुत ही सांसारिक दार्शनिक के उदाहरण हैं, जबकि प्लेटो एक संसारेतर दार्शनिक हैं । एक ओर बहुत से लोग अरस्तू के यथार्थवाद में बुद्धिमत्ता देखते हैं और प्लेटो के श्रेष्ठ सिद्धान्तों में भ्रान्ति पाते हैं । पुन: बहुत से लोग यह भी पाते हैं कि अरस्तू में महत्त्वाकांक्षा का अभाव है जबकि प्लेटो विशुद्ध दार्शनिक भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

15. How Plato and Aristotle differ in the philosophical enterprise ?
दार्शनिक उद्यमिता के संदर्भ में प्लेटो और अरस्तू में क्या भिन्नता है ?

16. What for is the search for eternal truth by Plato ?
प्लेटो की सात्विक सत्यों की खोज किसलिए है ?

17. How and why Aristotle tempered the aims of Platonic Philosophy ?
प्लेटो के दर्शन के उद्देश्यों से अरस्तू ने छेड़छाड़ क्यों और कैसे की ?

18. Why Aristotle finds worldly truth behind appearances ?
आभासों के पीछे अरस्तू सांसारिक सत्य को क्यों पाते हैं ?

19. How Aristotle differs from Plato ?
प्लेटो से अरस्तू के विचार भिन्न किस प्रकार हैं ?

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....